Advanced International Journal for Research (AIJFR)
E-ISSN: 3048-7641 ● Website: www.aijfr.com ● Email: editor@aijfr.com

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं चरित्र निर्माण: एक प्रासंगिक दृष्टिकोण

डॉ.रानी दुबे[1], आशुतोष उपाध्याय[2]

[1]सह - आचार्य , शिक्षाशास्त्र विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर, म.प्र.
[2]शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर, म.प्र.
ORCID: 0009-0006-2675-7644

सारांश

व्यक्ति और समाज के निर्माण में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है | देश काल में बदलाव के साथ शिक्षा की भूमिका और स्वरुप में अनेक परिवर्तन होते रहे है | पर शिक्षा में जो अभीतक बदलाव होते रहे है,, वह केवल बौद्धिक क्षमता के विकास पर बल देते रहे हैं | और विद्यार्थियों में केवल सूचना और रटने की प्रवीणता को बढ़ावा दिया जा रहा है | जब हम शिक्षा के उद्देश्यों को देखते है तो शिक्षा के उद्देश्यों में सर्वांगीण विकास, बौद्धिक विकास एवं चारित्रिक निर्माण पर बल दिया जाता है |पर क्या इन सभी उद्देश्यों को विद्यार्थियों में व्यावहारिक और प्रासंगिक रूप में निरुपित किया जाता है ? यह एक विचारणीय तथ्य है | क्योंकि आज के समय शिक्षा का मुख्य उद्देश्य ज्यादा से ज्यादा धनोपार्जन साधन का एक मुख्य लक्ष्य बनता जा रहा है | और शिक्षा के द्वारा बहुत सी नवीन तकनीकियों का अविष्कार भी हो रहा है, पर आज भी शिक्षा मानव की सर्वांगीण विकास से परे है , क्योंकि शिक्षा में मूल्य और चरित्र का स्थान विलोपित दिखाई दे रहा है और शिक्षा के मशीनीकरण पर अधिक बल दिया जा रहा है |

मुख्य शब्दावली: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, समग्र विकास एवं शिक्षा का भारतीय परिपेक्ष्य

प्रस्तावना

हमें प्रायः समाचार पत्रों एवं टेलीविजन के माध्यम से पता चलता है की अमुख संस्थान के विद्यार्थी ने परीक्षा में असफल होने के कारण आत्म हत्या की या एक अभियंत्रक ने कुछ अधिक पैसो की लालच में अनुचित कार्य किया, एक चिकित्सक ने अनुचित कार्य किया | अनुचित कार्य का तात्पर्य जो मानवता, नैतिकता एवं भावनात्मक विचारों या कार्यों के विपरीत है | इसका कारण कहीं न कहीं शिक्षा में मूल्यों और नैतिकता की कमी है क्योंकि ये सभी उत्कृष्ट शिक्षा तो ग्रहण किये है पर इनके अन्दर मूल्यों और चारित्रिक विकास की कमी रह गयी है |जो इनके चरित्र और मानवता को धक्का दे रही है | यही तक नहीं वर्तमान

समय में शिक्षा प्राप्त करना उसी को माना जा रहा जो धन उपार्जक के लिए आवश्यक है | तथा अधिकतर माता-पिता अपने बच्चों को उसी संस्थान में भेज रहे है जहा शिक्षा प्राप्त करने के बाद धनोपार्जन कर पाएँ | प्रायः यह संस्थान अंग्रेजी माध्यम के संस्थान है | और वह अपने संस्कृतियों त्याग कर पाश्च्यात संस्कृतियों की ओर आकर्षित होते जा रहे है | पर वह बालक के नैतिक, चारित्रिक विकास पर ध्यान आकर्षित नहीं कर पा रहे है | और इन्ही कारणों से समाज के प्रति व्यक्तियों में सद्भावना, नैतिक मूल्य, एवं सहयोग की भावना विलुप्त होती दिखलाई पड़ रही है| तथा हम ज्यादातर शहरों में देखे तो एक की मदद करने के लिए पडोसी भी नही आता है | इसमें शिक्षित लोग अधिक है |

प्राचीन काल में शिक्षा का मूल उद्देश्य मनुष्य में व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ व्यक्ति में चरित्र और मूल्यों के विकास पर अत्यधिक बल दिया जाता था | प्राचीन काल की शिक्षा की भावना *" वसुधैव कुटुम्बकं "* थी जिसका तात्पर्य सम्पूर्ण पृथ्वी एक परिवार है | इस वाक्य में सभी जनमानस में सौहार्द एवं मानवता दिखलाई पड़ती है | इस काल में शिक्षा में चरित्र, विनय, आदर- सम्मान पर विशेष दृष्टी दी जाती थी | शिक्षा के चरित्र निर्माण पर एक कथा है की "एक बार ऋषि उद्दालक अपने शिष्य आरुणि को खेत में बह रहे पानी को बंद करने के लिए आदेश देते है, और वह खेत पर जाता है, और तमाम प्रयासों के बाद भी पानी बंद नहीं हो पता है तो वह स्वयं लेट कर पानी बंद करता है" | इसी प्रकार अनेक कथाओं में गुरु –शिष्य की कहानी मिलती है जो विद्यार्थी में चरित्र निर्माण को दर्शाता है | पर कालांतर में धीरे –धीरे यह परंपरा दुर्बल होती गयी | अंग्रेजी हुकूमत तक आते –आते शिक्षा का जो कायापलट हुआ | उसने द्वारा भारतीय परंपरा की बुनियाद, गहनता और व्यापकता को प्रभावित कर दिया एवं शिक्षा और उसके अमृत वृक्ष को उखाड़ फेंका, और ज्ञान को जिज्ञासु के स्थान पर अर्थ – पिपासु बना दिया | सम्पूर्ण भारतीय शिक्षा प्रणाली को ध्वस्त करते हुए भारतीय चेतना में अंग्रेजी ज्ञान की श्रेष्टता को स्थापित किया| महात्मा गाँधी जी के अनुसार *"शिक्षा का तात्पर्य मानव में सर्वांगीण विकास, नैतिक विकास और चारित्रिक विकास से से हो और शिक्षा स्थानीय भाषा में हो"* | पर आज के लोग अध्यात्मिक और चारित्रिक विकास के स्थान पर भौतिकवादी बन रहे है, जो मूल्यों के हास का कारण है | आज के पढ़े- लिखे लोगो में मूल्यों की कमी दिखाई दे रही है और उनमे संस्कार विलोपित हो रहे है यह शिक्षा व्यवस्था और समाज का एक अभिशाप बन गया है | हम ज्यादातर देखते है कि वृद्धाश्रम में उन्ही के माता-पिता रहते है जो ज्यादा शिक्षित है और उत्कृष्ट शिक्षा प्राप्त कर चुके है |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा में व्यक्ति के चरित्र और व्यक्तित्व निर्माण को ही प्रमुख आधार माना हैं, जो विभिन्न बिन्दुओं को रेखांकित करता है, जो शिक्षा के द्वारा चरित्र निर्माण और वयक्तित विकास पर बल देता है | जो निम्नलिखित है –

1. शिक्षा का उद्देश्य
2. भारतीय भाषाओँ का सभी पाठ्यक्रमो में समावेश
3. पाठ्यक्रम में भारतीय दर्शन, संस्कृति और परम्पराओं का समावेश
4. पाठ्यक्रम में अंतर-आनुशासिक विषयों का समावेश

प्रस्तुत आलेख इन चार मुख्य बिन्दुओं पर आधारित है जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और व्यक्ति में चरित्र और व्यक्तित्व निर्माण में सहायक है |

शिक्षा का उद्देश्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 21 वीं सदी की पहली शिक्षा नीति है जिसका मूल उद्देश्य राष्ट्र की अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है | तथा इस नीति में राष्ट्र के विकास के लिए विज्ञान, गणित, और आधुनिक विषयों के साथ दर्शन, संस्कृति, तर्कशास्त्र एवं साहित्य विषयों को भी मुख्य रूप से सम्मिलित कियाकिया गया है, जिससे विद्यार्थियों में बौद्धिक एवं वैज्ञानिक क्षमता के साथ – साथ उसमें नैतिकता, मूल्य और चरित्र का भी निर्माण हो सके | जिससे समाज में सौहार्दपूर्ण जीवन, चरित्र एवं व्यक्तित्व का विकास हो सकें| बुनियादी शिक्षा का एक मूलभूत सिद्धांत है जो इस बात पर बल देता है, कि ज्ञान और श्रम परस्पर एक साथ जुड़े हुए हैं। गांधी जी ने इस शैक्षणिक सिद्धांत पर आधारित एक शैक्षिक संरचना की वकालत की थी। इसका तात्पर्य 'सभी के लिए बुनियादी शिक्षा' के रूप में है, फिर भी इस अवधारणा में कई महत्व समाहित हैं। बुनियादी शिक्षा विद्यार्थियों को विभिन्न कौशल शिक्षा प्राप्त करने के अवसर के साथ उनमे एक आपसी सहयोग की भावना उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा बच्चों के मन में शारीरिक श्रम के प्रति जुनून उत्पन्न करना जिससे वह अध्यायानोपरांत उसमें रोजगार के अवसर भी प्राप्त हो सकें| इस शैक्षिक दृष्टिकोण का आदर्श वाक्य 'सीखते हुए कमाई' था। इससे छात्रों में रचनात्मकता को बढ़ावा मिलेगा। चूँकि गांधीजी भारतीय गाँवों को आत्मनिर्भर संस्थाओं में बदलना चाहते थे, इसलिए उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि व्यावसायिक शिक्षा छात्रों की क्षमताओं को बढ़ाए और उन्हें अपने गाँवों की आत्मनिर्भरता में योगदान करने में सक्षम बनाए। *स्वामी विवेकानंद जी का कथन यह था कि, " जिस शिक्षा के माध्यम से आम व्यक्तियों के जीवन की चुनौतियों के लिए तैयार करने के लिए सहायक नहीं होती, जो चरित्र-बल, और परोपकार भावना का पोषण नहीं करती - क्या हम उसे वास्तविक रूप से शिक्षा कहा जा सकता है ?"* वास्तव में शिक्षा वह है जो व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनने के लिए सशक्त बनाती है। शिक्षा को ऐसे विचारों को आत्मसात करने में मदद करनी चाहिए जो सचरित्र जीवन का निर्माण करें और चरित्र का विकास करें।" ऐसी शिक्षा का लक्ष्य एक सर्वांगीण व्यक्तित्व का निर्माण करना है। एवं स्वामी जी ने शिक्षा ने शिक्षा को सभी जनमानस तक पहुचने और उनमे शारीरिक , मानसिक अध्यात्मिक, नैतिक और जनमानस में चरिरित्रिक विकास को माना है, जिससे आम जनमानस में आपसी सौहार्दपूर्ण का विकास हो सके | *श्री अरविंद जी का कथन है कि,* शिक्षा का सही मायने में विद्यार्थियों का शरीर, मन और आत्मा के सर्वांगीण विकास को बढ़ावा मिल सके। यह विद्यार्थियों को अपने भीतर निहित दिव्य सत्य की खोज में इन क्षमताओं का उपयोग में सक्षम बनाता है। शिक्षा विद्यार्थियों के समग्र विकास में सहायक होती है, यह बालक के जीवन के विभिन्न आयामों, जिनमें उसका शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा और चरित्र का समावेश हैं, यह विद्यार्थियों को सामंजस्यपूर्ण विकास के महत्व को सुलभ बनाती हैं। एवं "बालक की शिक्षा उसके स्वभाव के सर्वोत्तम, और सर्वाधिक व्यक्तित्व और जीवन-वर्धक पहलुओं को प्रतिबिम्बित करनी चाहिए। जिस ढाँचे के भीतर मन की क्रियाओं और विकास को आकार दिया जा सकें| इसके द्वारा विद्यार्थियों में आत्म एवं सर्वांगीण विकास, चरित्र का विकास हो सकें|

भारतीय भाषाओँ का सभी पाठ्यक्रमो में समावेश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मुख्य रूप से भारतीय भाषओं पर विशेष बल दिया गया है, जिसका मुख्य उद्देश्य यह भी है की अगर शिक्षा में भारतीय भाषाओँ का समावेश किया जाय तो उससे पाठ्यक्रम का ज्ञान सभी व्यक्तिओं में होगी, और वह आसानी से समझ भी सकते है | जब सभी व्यक्तियों को ज्ञान होगा तभी भारत विश्वगुरु बनने की ओर अग्रसर होगा| राष्ट्रीय शिक्षा

नीति 2020 का मूल उद्देश्य है कि शिक्षा उस भाषा में दी जाये जिसमे विद्यार्थी सहज रूप से सीख पाए, और विशेष रूप से प्रारंभिक शिक्षा पर बल दिया गया है जिसका माध्यम मातृभाषा हो अगर विद्यार्थी अपने मातृभाषा में शिक्षा ग्रहण करता है तो उसे अच्छी तरह से आत्मसात भी कर सकता हैं, उतना अन्य भाषा में शायद, राष्ट्रीय शिक्षा निति निति केवल भारतीय प्रारंभिक भाषा में ही नहीं अपितु उच्च शिक्षा में भी समावेश किया जाये| राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 ने सभी के लिए समावेशी, सुलभ और समतावादी शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने में भारतीय भाषाओं की महत्वपूर्ण और क्रांतिकारी भूमिका को उचित और सराहनीय रूप से स्वीकार किया है। इस नीति का मुख्य लक्ष्य बहुभाषी शैक्षणिक दृष्टिकोण पर है, जो भारत की समृद्ध भाषाई विविधता की भावना में निहित है, जिससे विद्यार्थियों के बीच बेहतर शिक्षण परिणामों और उन्नत संज्ञानात्मक विकास को बढ़ावा देने के अलावा सांस्कृतिक विरासत, स्थानीय ज्ञान प्रणालियों और लोकतांत्रिक भागीदारी के साथ एक गहरे जुड़ाव को समृद्ध करता है। यह शिक्षा नीति विद्यार्थियों को आधारभूत और प्रारंभिक शिक्षा के चरणों में अपनी मातृभाषाओं और क्षेत्रीय भाषाओं में अध्ययन करने में सक्षम बनाकर पहचान की पुष्टि, आत्मविश्वास के विकास और सहभागी शिक्षा के लिए एक ठोस आधार तैयार करती है।

पाठ्यक्रम में भारतीय दर्शन, संस्कृति और परम्पराओं का समावेश

भारत, जिसे अक्सर "सभ्यता का जन्मस्थान" कहा जाता है, एक अत्यंत विविधतापूर्ण देश है जहाँ पारंपरिक प्रथाएँ आधुनिक जीवन के साथ शांतिपूर्वक सह-अस्तित्व में हैं। एक समृद्ध सांस्कृतिक और दार्शनिक ताना-बाना जिसने सदियों से शिक्षाविदों और जिज्ञासुओं को आकर्षित किया है, इस गहनता के केंद्र में है। हम भारतीय दर्शन और संस्कृति के विविध पहलुओं और शाश्वत ज्ञान की खोज के लिए निकल पड़े हैं ताकि इसके रहस्यों को सुलझाया जा सके। भारतीय दर्शन में वेद, उपनिषद, भगवद्गीता और योग सूत्र सहित प्राचीन बौद्धिक कृतियों की शिक्षाएँ भारतीय सभ्यता का आध्यात्मिक आधार प्रदान करती हैं। ये कृतियाँ अस्तित्व की प्रकृति, जीवन के उद्देश्य और आध्यात्मिक मुक्ति (मोक्ष) के मार्ग से संबंधित गहन सत्यों को स्पष्ट करती हैं। भारतीय चिंतन का आधार आत्मा (वास्तविक स्व), ब्रह्म (परम सत्य), कर्म (कारण और प्रभाव का नियम) और धर्म (नैतिक कर्तव्य) जैसे विचारों पर आधारित है, जिससे विद्यार्थियों के मूल्यों, विश्वासों और विश्वदृष्टि को आकार प्राप्त होता हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में पाठ्यक्रमों में भारतीय संस्कृति और देशज परंपरा जैसे प्राचीन समय के साहित्य, जैसे पंचतंत्र, महाकाव्य (रामायण एवं महाभारत) जिसमे मानव चरित्र के सभी पहलुओं पर वर्णन किया गया है| बौद्ध साहित्य (जातक कथा) जिसमे महात्मा बिद्ध में पूर्व जन्म के कथावों का विवरण है| प्राचीन भारतीय अभिलेखों में भी नागरिको के लिए नियम व्यवस्था, संस्कृति एवं सामाजिक व्यवस्था इत्यदि जो वर्तमान समय में भी चरित्र निर्माण के दिशा में आवश्यक हैं| प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था जिसमे टोली शिक्षा, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली, गुरु-शिष्य परंपरा, प्राचीन गणितीय पद्धति, खगोल विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, वास्तुकला इत्यादि वर्तमान समय में विद्यार्थियों के लिए अति आवश्यक है| राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय दर्शन, संस्कृति एवं परम्पराओं पर विशेष ध्यान आकर्षित किया गया है | व्यक्ति में चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का विकास करना है, तो शिक्षा में भारतीय दर्शन एवं संस्कृति के समावेशन की आवश्यकता की विशेष जरुरत होगी क्योंकि प्राचीन समय से ही भारत ज्ञान और शिक्षा का केंद्र रहा है| जैसे तक्षशीला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी इत्यादि प्राचीन काल से शिक्षा के केंद्र रहे है, जिसमें भारत से बाहर के लोग भी यहाँ रहकर अध्ययन करते थे| यहाँ से जाकर ज्ञान का प्रचार-प्रसार करते थे | यहाँ की प्राचीन संस्कृति, दर्शन भी मनुष्य में जीवन में चरित्र में निर्माण एवं व्यक्तित्व का विकास करने में सहायक एवं वरदान साबित होगें |

पाठ्यक्रम में अंतर-आनुशासिक विषयों का समावेश

किसी विषय, अवधारणा या समस्या को प्रदर्शित करने के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों और शैक्षणिक क्षेत्रों का उपयोग करना बहु-विषयक शिक्षण तकनीक कहलाती है। इसमें एक ही विचार को कई अलग-अलग विषयों के दृष्टिकोणों से सीखना शामिल है। इसके माध्यम से छात्र अपने क्षितिज का विस्तार कर सकते हैं। बहु-विषयक शिक्षा का मुख्य लक्ष्य निपुणता प्राप्त करना है। यह दृष्टिकोण विशेषज्ञता के कई क्षेत्रों को मिलाकर किसी विषय या विचार पर चर्चा करने के लिए एक व्यापक या सर्वव्यापी दृष्टिकोण पर ज़ोर देता है। बहु-विषयक शिक्षण शैक्षणिक सीमाओं को पार करके सीखने को विस्तृत और सुदृढ़ बनाता है, जिससे छात्रों को विशेषज्ञता का एक साधन मिलता है। यह तथ्य कि इस पद्धति को पारंपरिक और ऑनलाइन दोनों कक्षाओं में पढ़ाया जा सकता है, इसे सीखना आसान बनाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में सभी पाठ्यक्रमों में अंतर-आनुशासिक विषयों का समावेश पर विशेष बल दिया गया हैं | जैसे अगर कोई विद्यार्थी मेडिकल, इंजीनियरिंग का अध्ययन कर रहा है तो वह उसके साथ- साथ सामाजिक विज्ञान, साहित्य, कला एवं संस्कृति के विषयों का भी अध्ययन कर सकते है| इससे विद्यार्थीं में अपने मूल पाठ्यक्रमों के साथ- साथ वह सामाजिक नैतिकता और मूल्य विकसित होगा, जो मानव के विकास के लक्ष्य में सहयोगी भी होगा| शिक्षा के सन्दर्भ में सभी पाठ्यक्रमों में अंतर-आनुशासिक विषयों का समावेश से विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों, चरित्र निर्माण तथा राष्ट्र के प्रति नैतिकता का भाव जागृत होगा | राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में में अंतर-आनुशासिक विषयों का समावेश पर विशेष ध्यान आकर्षित किया गया है| इस समावेशन के द्वारा कोई भी विद्यार्थी अपने मूल विषयों के साथ-साथ अन्य विषयों को भी पढ़ सकता है और दोनों विषयों के मूल को एक साथ समझ कर वह तुलनातमक रूप से आत्मसात भी कर सकता है | जैसे मेडिकल का विद्यार्थी अपने मूल विषय के साथ दर्शन का भी अध्यन करता है तो उसे अपने विशेशज्ञता के साथ –साथ दर्शन के मूल नैतिक आचरण ,मूल्य एवं मानवता का भी ज्ञान होगा |इससे उसमे अपने व्यवसाय के साथ –साथ नैतिक धर्म को भी समझ सकेगा | यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मनुष्य में नैतिक मूल्य और चरित्र निर्माण के सन्दर्भ में एक सकारात्मक पहल है |

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा निति 2020, 21 वीं सदी की वह शिक्षा नीति है जो केवल सूचनात्मक ज्ञान ही नहीं अपितु मानव जीवन के सभी आयामों पर दृष्टि प्रदान करती हो, चाहे व बाल्यावस्था की शिक्षा हो या विद्यालयी शिक्षा हो यह शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर मानव के विकास को परिलक्षित करती है| इस शिक्षा नीति द्वारा शिक्षा में समावेशन, देखभाल, व्यक्तित्व विकास, कौशल विकास, मूल्य एवं नातिकता का पोषण, चरित्र निर्माण, अध्यात्मिक विकास, विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, भारतीय संस्कृति और सभ्यता का विकास इत्यादि चहुँमुखी विकास पर केन्द्रित है, जिसके द्वारा विद्यार्थियों में चहुँमुखी विकास हो सकें|

संदर्भ सूची

1. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. शिक्षा मंत्रालय,भारत सरकार.
2. वर्मा, ए. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भारतीय संस्कृति का संरक्षण. ज्ञान-धारा पत्रिका, 10(4), 180-195.

3. मिश्रा, जी. (2021). भारतीय ज्ञान परंपरा: NEP 2020 का पुनरुत्थानवादी दृष्टिकोण. भारतीय शिक्षा जर्नल, 5(2), 45-56.
4. वर्मा, के. (2021). राष्ट्रीय शिक्षा नीति और बहुभाषावाद: एक केस स्टडी. जर्नल ऑफ मल्टीलिंगुअल एजुकेशन, 4(4), 200-215.
5. बंसल, पी. (2021). गांधी का 'हैंड्स, हार्ट एंड हेड' सिद्धांत और NEP 2020 में बहु-विषयक दृष्टिकोण. सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका, 10(1), 40-55.
6. तिवारी, ए. (2022). भारतीय शिक्षा प्रणाली का भविष्य: बहु-विषयक दृष्टिकोण. भारतीय शिक्षा प्रणाली जर्नल, 13(1), 25-40.
7. सिंह, एस. & शर्मा, वी. (2022). NEP 2020 में चरित्र निर्माण और नैतिक शिक्षा का महत्व. रिसर्च जर्नल ऑफ ह्यूमनिटीज एंड सोशल साइंसेज, 7(3), 112-125.
8. तिवारी, पी. (2022). मातृभाषा में उच्च शिक्षा: NEP 2020 के निहितार्थ और चुनौतियाँ. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड सोशल साइंसेज, 7(1), 22-35.
9. शर्मा, आर. (2023). शिक्षक की भूमिका: NEP 2020 के तहत चरित्र निर्माण में एक महत्वपूर्ण कारक. शिक्षक शिक्षा जर्नल, 7(2), 65-78.
10. वर्मा, एस. & जोशी, आर. (2024). मूल्य-आधारित शिक्षा और NEP 2020: एक साहित्य समीक्षा. नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा जर्नल, 12(3), 110-125.
11. सिंह, डी. (2025). राष्ट्रीय शिक्षा नीति और सतत विकास के लक्ष्य. शैक्षणिक नवाचार जर्नल, 13(2), 88-102.